भारत का निर्यात आउटलुक

प्रिलिम्स के लिये: भारत का निर्यात आउटलुक,

[सकल घरेलू उत्पाद](), [विश्व व्यापार संगठन](), [विदेश व्यापार नीति](), **निर्यात योजना के लिये व्यापार अवसंरचना (TIES)**

मेन्स के लिये:

भारत का निर्यात आउटलुक, चुनौतियाँ और आगे की राह

चर्चा में क्यों?

भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिये वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं को देखते हुए निर्यात लक्ष्यों की घोषणा के साथ **टारगेट रेंज अप्रोच** अपनाने का निर्णय लिया है।

- वर्ष 2022-23 के दौरान वस्तु निर्यात में रिकॉर्ड 450 बिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य हासिल करने के बावजूद भारत के **आउटबाउंड शिपमेंट को वर्ष 2023-2024 की पहली तिमाही** में कई प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

टारगेट रेंज अप्रोच:

- **चार प्रमुख मापदंडों पर आधारित लक्ष्य:**
    - **वर्ष 2030 तक 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का समग्र लक्ष्य:**
        - भारत की नई विदेश व्यापार नीति, 2023 के अनुसार, **भारत का लक्ष्य वर्ष 2030 तक 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** का कुल निर्यात लक्ष्य हासिल करना है, जिसमें **सेवाओं और वस्तुओं के निर्यात का योगदान एक ट्रिलियन डॉलर** का होगा।
        - चालू वर्ष के लक्ष्य निर्धारित करते समय इस दीर्घकालिक उद्देश्य पर विचार किया जाएगा।
    - **आयातक देशों का आयात-सकल घरेलू उत्पाद अनुपात:**
        - लक्ष्य निर्धारण में उन देशों के **सकल घरेलू उत्पाद अनुपात में आयात** को ध्यान में रखा जाएगा जो भारतीय वस्तुओं के आयातक हैं।
        - यह अनुपात विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में भारतीय उत्पादों की संभावित मांग के संबंध में जानकारी प्रदान करेगा।
    - **भारत का सकल घरेलू उत्पाद में निर्यात अनुपात:**
        - देश की निर्यात क्षमता का आकलन करने के लिये भारत के **निर्यात से GDP अनुपात** का आकलन किया जाएगा।
    - **पिछले वर्षों की वृद्धि प्रवृत्ति:**
        - भारत के **व्यापार प्रदर्शन को समझने और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारण पर विचार करने के लिये निर्यात में पिछले विकास रुझानों का विश्लेषण** किया जाएगा।
- **लक्ष्य सीमा:**
    - वित्त वर्ष 2022-23 में निर्यात **450 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का था। इस आँकड़े के आधार पर और **10% की रूढ़िवादी विकास दर (Conservative Growth Rate)** मानते हुए व्यापार विशेषज्ञ निम्नलिखित संभावित लक्ष्य सीमा का सुझाव देते हैं:
        - **रेंज का निचला स्तर:** 451 बिलियन अमेरिकी डॉलर (पिछले वर्ष के निर्यात से थोड़ा ऊपर)।
        - **रेंज का ऊपरी स्तर:** 495 बिलियन अमेरिकी डॉलर (10% की वृद्धि दर मानकर)।
- **निगरानी तंत्र:**
    - वाणिज्य विभाग हर महीने निर्यात प्रदर्शन को ट्रैक करने के लिये एक निश्चित संख्या का उपयोग करेगा, जो **मध्य-मूल्य या औसत** हो सकता है।
    - यह निगरानी तंत्र **प्रगति की समय पर जानकारी प्रदान करेगा और यदि ज़रूरी हो तो आवश्यक समायोजन करने में मदद करेगा।**

भारतीय निर्यात का वर्तमान परिदृश्य:

- **निर्यात प्रदर्शन:**
    - हाल के **महीनों** में माल निर्यात में मंदी की **एक शृंखला देखी** गई है, जून 2023 में 22% की गिरावट के साथ, **37 महीनों में सबसे बड़ी गिरावट** देखी गई।
        - जून 2023 में 32.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात **अक्तूबर 2022** के बाद सबसे कम था।
    - निर्यात सेवाओं में भी मंदी देखी गई है, **अमूर्त निर्यात से विदेशी मुद्रा आय** 2023-24 की पहली तिमाही **में केवल 5.2% बढ़कर 80 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई,** जबकि पिछले वर्ष 2022-23 में लगभग 28% की वृद्धि हुई थी, जहाँ आय 325 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गई थी।

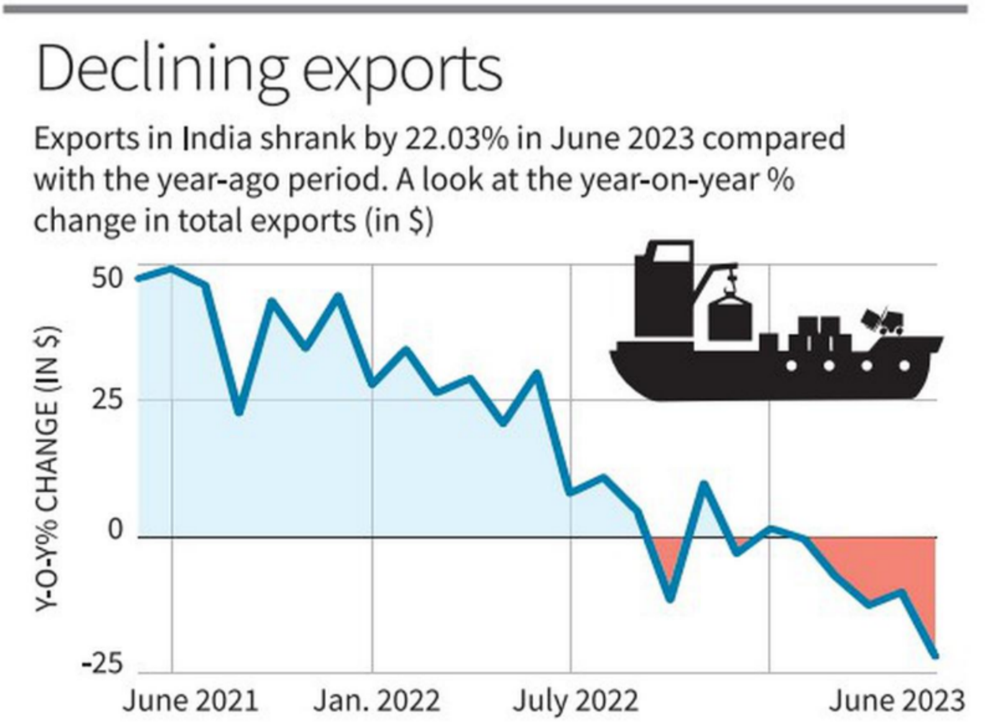

[//](#)

- **निर्यात को प्रभावित करने वाले कारक:**
    - **वैश्विक तेल कीमतें:**
        - **पहली तिमाही में** पेट्रोलियम निर्यात **में 33.2% की भारी गिरावट देखी गई,** जो मुख्य रूप से वैश्विक तेल की कीमतों में कमी के कारण हुई।
        - इसके अतिरिक्त **रूसी तेल शिपमेंट पर मूल्य सीमा प्रतिबंधों ने भी मांग में कमी लाने में योगदान दिया है।**
    - **बाह्य कारक:**
        - [विश्व व्यापार संगठन (WTO)]() का 2023 में धीमी वैश्विक व्यापार वृद्धि का पूर्वानुमान भारत के निर्यात दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है, जिससे अधिक सतर्क दृष्टिकोण की आवश्यकता हो रही है।
- **सरकार का व्यापक लक्ष्य:**
    - नई [विदेश व्यापार नीति]() के अनुसार, निर्यात के लिये भारत का व्यापक उद्देश्य वर्ष 2030 तक 2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य हासिल करना है, जिसमें सेवाओं और वस्तुओं के निर्यात में प्रत्येक का योगदान एक ट्रिलियन डॉलर होगा।

भारत में निर्यात क्षेत्र की स्थिति:

- **व्यापार की स्थिति:**
    - व्यापार घाटा, जो निर्यात और आयात के बीच का अंतर है, वर्ष **2022-23 में 39% से अधिक** बढ़कर रिकॉर्ड 266.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जबकि वर्ष 2021-22 में यह 191 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।
    - **वर्ष 2022-23 में व्यापारिक आयात में 16.51%** की वृद्धि हुई, जबकि व्यापारिक निर्यात में 6.03% की वृद्धि हुई।
        - हालाँकि कुल व्यापार घाटा वर्ष 2022-23 में 122 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जबकि वर्ष 2022 में यह 83.53 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जिसे सेवाओं में व्यापार अधिशेष से समर्थन मिला।

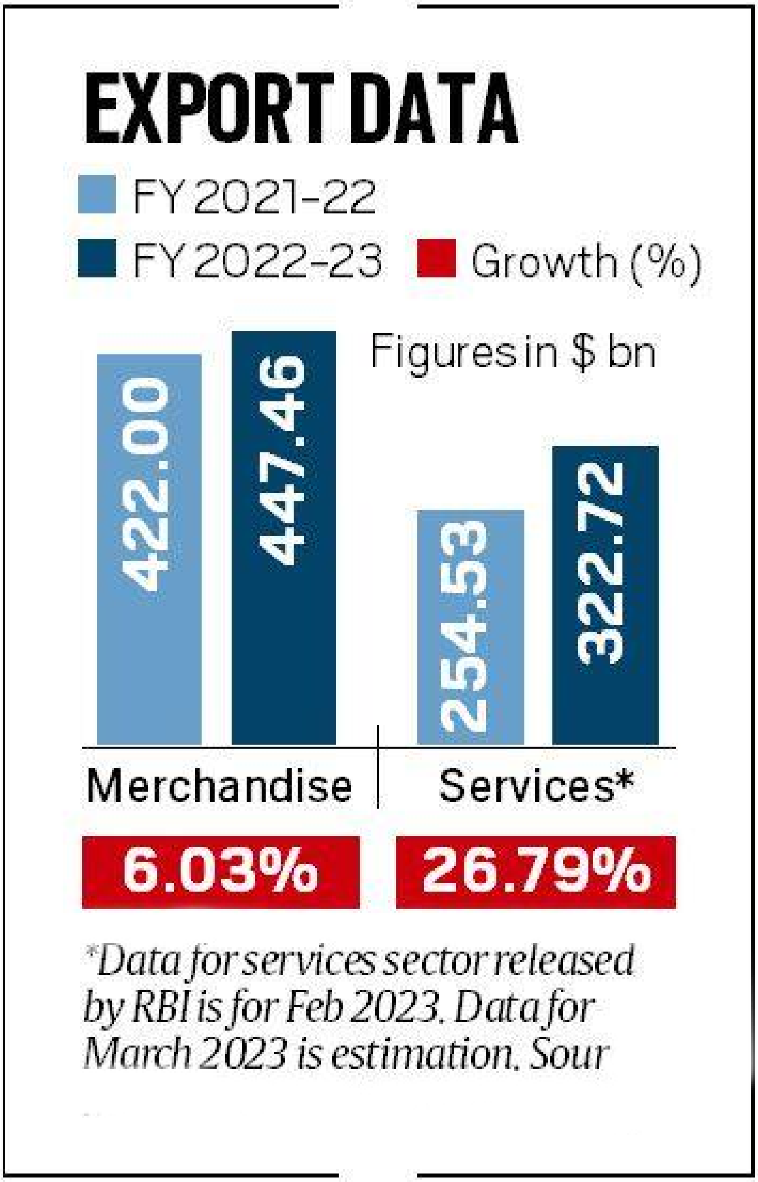

- **भारत के प्रमुख निर्यात क्षेत्र:**
  - **इंजीनियरिंग वस्तुएँ:** इसमें वित्त वर्ष 2012 में 101 बिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात के साथ 50% की वृद्धि दर्ज की गई।
  - **कृषि उत्पाद**: महामारी के बीच भोजन की वैश्विक मांग को पूरा करने के लिये सरकार के दबाव में कृषि निर्यात में वृद्धि हुई । भारत 9.65 अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य का **चावल निर्यात करता है**, जो कृषि वस्तुओं में सबसे अधिक है।
  - **कपड़ा और परिधान**: भारत का कपड़ा और परिधान निर्यात (हस्तशिल्प सहित) वित्त वर्ष 2012 में 44.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का रहा, जो प्रत्येक वर्ष के आधार पर 41% की वृद्धि है।
    - सरकार की मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीज़न एंड अपैरल (MITRA) पार्क जैसी योजनाएँ इस क्षेत्र को बढ़ावा दे रही हैं।
  - **फार्मास्यूटिकल्स और ड्रग्स**: भारत मात्रा के हिसाब से दवाओं का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक और जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्त्ता है।
    - भारत अफ्रीका की जेनरिक दवा मांग का 50% से अधिक, अमेरिका में जेनेरिक मांग का लगभग 40% और UK में सभी दवाओं की 25% हिस्से की आपूर्ति करता है।

भारत में निर्यात क्षेत्र से संबंधित चुनौतियाँ:

- **वित्त की उपलब्धता में चुनौतियाँ:**
  - निर्यातकों के लिये किफायती और समय पर वित्त उपलब्ध करना महत्त्वपूर्ण है।
  - हालाँकि अनेक भारतीय निर्यातकों को **उच्च ब्याज दरों, संपार्श्विक आवश्यकताओं और वित्तीय संस्थानों से ऋण उपलब्धता की कमी के कारण वित्त प्राप्त करने में चुनौतियों** का सामना करना पड़ता है विशेष रूप से लघु और मध्यम उद्योगों (SME) के लिये।
- **सीमित विविधीकरण:**
  - भारत का निर्यात इंजीनियरिंग सामान, कपड़ा और फार्मास्यूटिकल्स जैसे **कुछ क्षेत्रों पर केंद्रित** है जो इसे वैश्विक मांग में उतार-चढ़ाव तथा बाज़ार जोखिमों के प्रति संवेदनशील बनाता है।
  - निर्यात का सीमित विविधीकरण **भारत के निर्यात क्षेत्र के लिये एक चुनौती** है क्योंकि बदलती वैश्विक व्यापार गतिशीलता इसकी

व्यापकता को सीमित कर सकती है।

- **संरक्षणवाद और विवैश्वीकरण में वृद्धि:**
  - बाधित वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था (**रूस-यूक्रेन युद्ध**) और **आपूर्ति शृंखला के शस्त्रीकरण** के कारण विश्व भर के देश संरक्षणवादी व्यापार नीतियों की ओर बढ़ रहे हैं जिससे भारत की निर्यात क्षमताएँ कम हो रही हैं।

निर्यात वृद्धि हेतु प्रमुख सरकारी पहल:

- **निर्यात हेतु व्यापार अवसंरचना योजना (TIES)**
- **पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (NMP)**
- **ड्यूटी ड्रॉ-बैक योजना**
- **निर्यात उत्पादों पर शुल्क और कर छूट योजना (RoDTEP)**
- **राज्य और केंद्रीय कर एवं लेवी में छूट**

आगे की राह

- निर्यात प्रतिस्पर्द्धात्मकता बढ़ाने के लिये बेहतर **बुनियादी ढाँचा और लॉजिस्टिक्स महत्त्वपूर्ण** हैं।
- भारत को **परिवहन नेटवर्क, बंदरगाहों,** सीमा शुल्क निकासी प्रक्रियाओं और निर्यात-उन्मुख बुनियादी ढाँचे जैसे निर्यात प्रोत्साहन क्षेत्रों तथा विशेष विनिर्माण क्षेत्रों में निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिये।
- निर्यातोन्मुख उद्योगों में कुशल श्रमिकों की उपलब्धता बढ़ाने हेतु **कौशल विकास कार्यक्रम** लागू किये जाने चाहिये।
- इसके अतिरिक्त **स्वचालन, डिजिटलीकरण और उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों** जैसी प्रौद्योगिकी अपनाने को प्रोत्साहित करना चाहिये। साथ ही यह निर्यात क्षेत्र में उत्पादकता, प्रतिस्पर्द्धात्मकता और नवाचार को भी बढ़ावा दे सकता है।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-s-export-outlook